International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 672-673

महान सितार वादकः उस्ताद रईस खाँ साहब

मोनिका ठाकुर

शोधकर्त्री, पी. एच. डी., संगीत विभाग, पंजाब विश्व विद्यालय, चण्डीगढ़, पंजाब, भारत।

प्रस्तावना

सितार वादन के क्षेत्र में सुप्रसिद्ध कलाकारों में श्रेष्ठ सितार वादक उस्ताद रईस खाँ साहब हुए जिनका सितार वादन अद्वितीय था। खाँ साहब मेवाती घराने से सम्बन्ध रखते है और अपने गायकी अंग और अपनी अति द्रुत लय में प्रगाढ़ गमकों का अवरोहात्मक प्रयोग करने के लिए जाने जाते रहे हैं। इनकी वादन–शैली भावात्मक एवं रसात्मक गुणों से परिपूर्ण थी। इनके वादन में सौन्दर्य तत्व कभी लुप्त नहीं होता था। सफाई, सुरीलापन, मींड का काम, स्वर विस्तार की गहराई तथा बारीकियाँ इनके वादन में विद्यमान थीं। उस्ताद रईस खाँ ने शास्त्रीय संगीत, उप–शास्त्रीय संगीत, चित्रपट संगीत, गजल गायकी, संगीत के प्रत्येक क्षेत्र में अपना अविस्मरणीय योगदान दियां।

उस्ताद रईस खाँ साहब

काला का मुख्य उद्देश्य केवल मनोरंजन मात्र ही, नहीं है बल्कि श्रोताओं के अन्तर्मन को आंतरिक सुख प्रदान करना है। एक श्रेष्ठ कलाकार ही कलाओं को सुन्दर एवं प्रभाविक रूप में प्रस्तुत करता है। जिससे सुनने वालों को असीम आनन्द की प्राप्ति होती है। संगीत जगत के ऐसे ही प्रख्यात सितार वादक रहे है, जिनकी सितार वादन की धुन सुन कर श्रोता मन्त्र–मुग्ध हो जाते है। ऐसी महान शख्सीयत का नाम है– उस्ताद रईस खाँ साहब, जो सितार वादन के श्रेष्ठ कलाकारों में अग्रणी रहे।

इनका जन्म 25 नवम्बर सन् 1939 को भारत के इन्दौर नगर में हुआ। इनके पिता जी उस्ताद मुहम्मद खाँ प्रसिद्ध रूद्रवीण वादक सुरबहार, बीनकार व सितार–वादक थे एवं माता नसीरन भी एक कुशल गायिका एवं उस्ताद विलायत खाँ साहब आपके नाना और विलायत खाँ साहब आपके मामा थे।

खाँ साहब को संगीत विरासत में ही प्राप्त हुआ। बचपन से ही आप में सांगीतिक गुणों का समावेश था। अतः संगीत के प्रति रूचि को देखते हुए इनके पिता जी ने इनको नारियल के खोल (Coconut Shell) से बनी हुई सितार खिलौने के रूप में उपहार में दी और सर्वप्रथम सिर्फ दो राग यमन और केदार सिखाए जिन्हें आप ग्यारह वर्ष की आयु तक बजाते रहे व उनका अभ्यास करते रहे। इस प्रकार सितार की प्रारम्भिक शिक्षा इनको इनके पिता जी से प्राप्त हुई। किन्तु दुर्भाग्यवश बहुत छोटी आयु में ही आपके पिता जी का साया आपके सर पर नहीं रहा। सन् 1967 में इनके पिता जी के देहान्त के पश्चात् इनकी माता जी ने ही इनका पालन–पोषण किया। इनके माता खाँ साहब को एक उच्च श्रेणी का सितार वादक बनाना चाहती थीं। इसी उद्देश्य से उन्होंने इनको संगीत का प्रशिक्षण बड़ी ही कठोरता से प्रदान किया। मात्र पाँच बर्ष की आयु में ही खाँ साहब ने स्कूल, कॉलेज कई जगह अपने वादन से श्रेताओं को आश्चर्यचकित करना आरम्भ कर दिया था। इन्होंने अपनी प्रतिष्ठा का झण्डा देश में ही नहीं बल्कि परदेस में भी लहराया

मेवाती घराने से सम्बन्धि रखने वाले एक सम्पूर्ण सितार वादक जिन्होंने अपने जीवन का एक मात्र लक्ष्य सितार, को अपनी कल्पना के माध्यम से नया स्वरूप प्रदान किया। इनके वादन में मेवाती घराने की विशैषता ध्रुपद, धमार, ख्याल अन्य घराने की वादन व गायन शैली से परे अनुभव होती है। इस घराने की शैली को बनाए रखते हुए व एक नया रंग आपके सितार में, गायन की खुशबु को जीवन पर्यन्त बिखेरता रहा। नव संगीत निर्माण की अनुभूति से जन–जन आपसे प्रेरित हुआ। आपके सितार वादन से ऐसा प्रतीत होता जैसे गायकी अंग की सितार को मानो कण्ठ प्राप्त हो गया हो, जो सभी भाव–करूण, वीर, श्रृंगारिक आदि की गाथा सुना कर श्रोताओं को रोमांचित करती रही हो।

उस्ताद रईस खाँ साहब की सितार वादन शैली के विषय में बात करें तो ध्रुपद, बीन, तन्त्रकारी व विशेषतः गायकी अंग की सितार उनके वादन की मुख्य विशेषता है। इनके वादन में जहाँ भवात्मक रूप दृश्यमान होता था वही कलात्मक रूप विचित्रता उत्पन्न करता जिससे सौन्दर्य बौद्ध के चरम बिन्दु का एहसास होता। इनका वादन ओजपूर्ण एवं स्वच्छन्द कल्पना से युक्त है। इनके वादन में एक गति वेग है जो अपने परवाह से श्रेताओं को बरबस बाँध लेता। उस्ताद रईस खाँ साहब की वादन शैली में आलाप की बढ़त व एक–एक स्वर का निभिन्न प्रकार से सम्बोधन, स्वरो की सम्पूर्णता का भाव प्रकट करता उद्वाहरण–राग यमन में आलाप करते हुए निषाद स्वर का विभिन्न प्रकार से प्रयोग किया गया है। निषाद स्वर में कण, मींड, खटका, घसीट व सुन्दर मुर्कियों का तारों पर सुरीला प्रयोग आश्चर्यचकित करता है।

आपके वादन में सुर के चारों ओर का श्रुति प्रयोग राग के सवाल–जवाब, मिज़राव के कठिन व दमदार प्रहार, मीण्ड, मुर्की व वादन की अन्य क्रियाओं का अद्भुत प्रयोग मानों स्वरों में प्राण की उत्पत्ति मात्र नहीं बल्कि एक राग के शरीर का संपूर्ण परिचय भलि–भांति प्रदर्शित करता। इनके वादन में बन्दिशों व छन्दों का उठान– विठान मानों ऐसा है जैसे सावन के महीने में सखियों का झूला–झूलना। इनके द्वारा अद्भुत स्वरों के माध्यम से बराबर की लय दुगुन, तिगुन, चौगुन व आडी कुआडी, बिआड़ी लय श्रोताओं को मग्न कर रंजकता उत्पन्न करती है। स्वरों के इस खेल में चिकारी की तारों का प्रयोग आप बहुत कुशलता से करते। इसके अतिरिक्त तानों का प्रयोग अत्यधिक तीव्र गति से होता। आपके द्वारा मेरूखण्ड की तानें, घूट की तान, वक्र तान, फिरत की तान व विशेष रूप से गमक की तानों का प्रयोग अविस्मरणीय है। राग प्रस्तुतिकरण के अंतिम चरण में इनके द्वारा झाले का वादन अति–अति द्रुत लय में इस प्रकार होता जिसे सुनकर ऐसा प्रतीत होता मानों प्रत्येक रसिक स्वरों की बौछार में भीग रहा हो और असीम आनन्द को प्राप्त कर रहा हो।

खाँ सहाब को प्रायः राग यमन कल्याण, चारूकेशी दरबारी अधिक प्रिय थे। परन्तु इनके द्वारा बजाया गया प्रत्येक राग परिपूर्ण स्थिति को प्राप्त है। भाव की अनुभूति तो इनके वादन में श्रण्य है ही परन्तु उप–शास्त्रीय संगीत की विधा दुमरी में स्वरों की चपलता व

चंचलता का आभास दिव्य है। वहीं इनके द्वारा कई रागों में धुनें प्रस्तुत की गई है परन्तु कुछ एक धुनें अत्यधिक प्रसिद्ध हैं जैसे– 'लोकप्रिय' धुन, 'रसिया धुन', अफगान की 'अनार–अनार' धुन, जिसका वादन जिसका वादन फिल्म 'पाकिज़ा ' में भी इनके द्वारा किया गया।

चित्रपट संगीत में भी खाँ साहब ने अपनी सितार की धुन से शास्त्रीय संगीत को प्रोत्साहन दिया। सदाबहार नगमों में आपके सितार की तारों की झन्कार ने सुनने वालों के दिलो पर अपनी छाप इस कदर छोड़ी जो कि अविस्मरणीय है। खाँ साहब तीस साल तक फिल्मी जगत से जुडे रहे और तकरीबन 200 गीतों में सितार वादन किया। इन्होंने फिल्म जगत के कई सुप्रसिद्ध संगीत निर्देशकों के साथ काम किया जिसमें नौशाद, ओ–पी. नैय्यर, शंकर– जय किशन, रोशन जी अदि है। उस्ताद रईस खाँ मदन मोहन जी के तो बहुत ही प्रिय थे। तकरीबन उनके सभी गीतों में अपने सितार वादन किया है जैसेः–

1. मैंने रंग ली चुनरिया फिल्म दुल्हन एक रात की 1967
2. हम है माताए–कूचा दस्तक 1970
3. बेइयॉ ना धरो दस्तक 1970
4. आज सोचा तो आँसू भर हँस्ते ज़ख्म 1973

काफी समय मुम्बई में रहने के पश्चात् उस्ताद जी पाकिस्तान चले गए और अपने परिवार के साथ वही रहने लगे।

उस्ताद रईस खाँ साहब सुविख्यात सितार–वादक तो थे ही गज़ल गायक भी थे। इन्होंने सर्वप्रथम 1978 में बी बी सी में गज़ल 'घुघरूँ टूट गए' को रिकॉर्ड किया। जिसको श्रेताओं से काफी प्रशंसा मिली। इसके अतिरिक्त अपने और भी कई गज़ले गाई और साथ ही सितार पर भी गज़लों का बखूबी वादन किया।

संगीत के क्षेत्र में दिए गए योगदान के लिए आपको सन् 1995 में पकिस्तान सरकार की ओर से President's Pride of Performance के पुरस्कार से सम्मानित किया गया

urdu literature and Fine Arts Tehzeeb Foundation की ओर से इनको सम्मान प्राप्त हुआ।

#सन् 2010 में ब्सेंपबंस उनेपब वि नइ.बवदजपदमदज से आपको आवार्ड प्राप्त हुआ

सन् 2012 में इनको भारतीय संसद में पंडित अमरनाथ वाग्येकार पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

उस्ताद रईस खाँ साहब 78 वर्ष होकर भी संगीत के उत्थान व विकास में प्रयत्नशील रहे। इस आयु में भी संगीत सभा व समारोह में भाग लेकर अपने सितार वादन से जनसमूह को लुभान्वित करते रहे। दुर्भाग्यवश इस महान सितार वादक का 6 मई 2017 को देहाँत हो गया। किन्तु आज भी इनकी गायकी अंग की सितार और उस पर इनकी परिकल्पना की गाथा मानो शरीर में रामांच उत्पन्न करती है। आप जहाँ एक उत्कृष्ट सितार वादक थे। वहीं एक उत्तम व्यक्तित्व के परिचायक भी। मन व भाव का सौन्दर्य एक संगीतकार के संगीत में चार– चाँद लगता है वही उसके परिपूर्ण व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति भी होती है, इसी अभिव्यक्ति का स्पष्ट उद्धाहरण है – उस्ताद रईस खाँ साहब

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. भारतीय संगीत के तन्त्री वाद्य–डा. प्रकाश महादिक मध्य प्रदेश, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, भोपाल 462003
2. भारतीय संगीत और संगीतज्ञ –रामलाल माथुर, क्लासिक कलैक्शन, जयपुर
3. हमारे संगीत रत्नः लक्ष्मणीनारायण गर्ग, संगीत कार्यालय, हाथरस, चतुर्थ संस्करण अक्तूबर 1984
4. https:\\en. m.wikipedia.com
5. mewatigharana.com